 ISSN NO:0376-8163

‘भीष्म साहनी के लेखन में’ समाजशास्त्र अध्ययन

डॉ० सुनीता
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
समरहिल, शिमला—5

भीष्म साहनी वामपंथी विचारधारा की एक ऐसी शख्सीयत थी जो समाजवाद को प्रोत्साहन व महत्व देती थी। भीष्म साहनी का यथार्थवाद प्रेमचन्द की परम्परा का होते हुए भी कई मायनों में उनसे भी आगे है। भीष्म साहनी को अपने साहित्य में दोहरी लड़ाई लड़नी पड़ी और वे, एक ओर तो आधुनिकता—बोध की विसंगति और पराएपन के खिलाफ थे और दूसरी ओर रूढ़ियों, अंधविश्वासों वाली धार्मिक कुरीतियों के विरूद्ध थे। इसके साथ ही राष्ट्रीय चरित्र के सम्प्रदाय निरपेक्ष—लोकतंत्र निर्माण की भूमिका भी बनाते है। जनता के नैतिक संघर्ष के प्रति समझदारी पैदा करना भी भीष्म साहनी के कथा—समाजशास्त्र अध्ययन की एक विशेषता है। भीष्म साहनी के साहित्य से जनवादी मनुष्य की धारणा बनती है।

‘‘भीष्म साहनी ने भारतीय समाज में फिरकापरस्ती, कट्टर धार्मिकता और धर्मांधता के सामाजिक संदर्भ को न केवल पर्त—दर—पर्त उघाड़ा है, बल्कि हिन्दू और मूस्लिम कट्टरवादिता का चित्रण भी किया है जिनकी घृणा का पात्र अकसर गरीब ही बनते हैं, चाहे वह हिन्दू हो या मुस्लिम। इसी धर्मांधता के कारण इन साम्प्रदायिक तत्वों को समाज में एक—दूसरे का खून बहाने की खुशी स्वतंत्रता मिल जाती है जो सामाजिक घटना को बनाए रखना चाहते है, उन्हें मौत के घाट उतारा जाता है।[1]

आज जबकि विश्व साम्राज्यवादी जनता की आजादी के विरूद्ध आक्रामक हो गया है, राष्ट्रीय स्वतन्त्रंता को समाप्त करने की साजिशें बना रहा है, वह देशीय पूंजीवाद से मिलकर लोकतंत्र की नसों को काट रहा है। भीष्म साहनी के शांत और

शालीन व्यक्तित्व की रचना में मार्क्सवादी द्वंद्ववाद की सृजनशीलता के गुण विद्यमान है। भारत में मध्यवर्ग का मन अभी तक आधुनिकीकरण की धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्रीय चेतना से विरक्त है। भीष्म साहनी ने अपने साहित्य में मध्य वर्ग के संस्कारों को बदलने का प्रयास किया है। भीष्म साहनी ने राष्ट्रीय भावात्मक एकता की वस्तुपरक परिस्थितियों को स्पष्ट किया है।

'तमस' में तत्कालीन राजनीतिक दलों की विधिवत् राजनीतिक पार्टियों के रूप में लिया गया है जिसमें स्वयं प्रमुख पार्टी के बहुत से अवसरवादी सदस्य भी दंगों के बारे में चिंतित नहीं है। शिष्ट मंडल के अधिकांश सदस्य संकीर्ण व्यक्तिवादी हैं तथा सभी को अपनी–अपनी पड़ी हुई है। बख्शी जी, एक समझदार तथा ईमानदार व्यक्तित्व वाले लगते हैं, लेकिन उनकी समझदारी की विशुद्ध राजनीतिक चेतना स्थिति में न देखकर हम उसे एक वयोवृद्ध की निर्मल अनुभवी भावना के अंतर्गत समझ सकते हैं। राजनीति चाहे पार्टी टिकट प्राप्त करना एक साधारण बात समझते है। जनता का प्रतिनिधि योग्यता के आधार पर नहीं, बल्कि पैसे के आधार पर चुनावों में खड़ा किया जाता है। अंतरिम सरकार होते हुए भी प्रशासन की बागडोर अंग्रेज के हाथ में थी। अंग्रेजों द्वारा चलाए गए साम्प्रदायिक दंगों के अंत तक बख्शी जी के पास कोई जवाब नहीं था और न ही पार्टी के पास उसके विरूद्ध कोई कारगर नीति। देश की सत्ता सम्भालने वाले ही ऐसे लोग है तो देश का क्या हाल होगा, अगर शासन चलाने वाले ही अनैतिक तरीके अपनाए, तो जनता के हित की बात कौन करेगा?

भारतीय समाज में बहुत जनसंख्या हिन्दू धर्म को मानने वालों की है। वे अपनी संस्कृति और धार्मिक इतिहास तथा धार्मिक परम्पराओं के साथ अंतगर्भित है।

उपन्यासकार भीष्म साहनी भारत विभाजन के समय हुए साम्प्रदायिक दंगों के भुक्तभोगी रहे हैं तथा साम्प्रदायिकता में निहित धर्म को प्रमुख माना है। उपन्यास का आरम्भ भी धार्मिक उन्माद से होता है। मुरादअली नामक कमेटी के कारिंदे ने पाँच

रुपये का एक नोट उसकी जेब में ढूंसते हुए यह काम सौंपा था, ''हमारे सलोतरी साहब को एक मरा हुआ सूअर चाहिए, डॉक्टरी काम के लिए।''[2] उसके बाद सूअर को मस्जिद के पास फैंक दिया। मुसलमान भड़क उठे। बाद में गाय ही हत्या की सूचना भी उपन्यासकार देता है, ''सुना है गाय भी मारी गई है। गंदे नाले के पास कोई मार कर फैंक गया है।''[3] हिन्दू धर्म के लोग गाय को माता के समान पूजनीय मानते हैं। इन सभी कारणों से भारत में होने वाले साम्प्रदायिक दंगों में 'धर्म' प्रमुख निभा रहा है, जिसका वर्णन भीष्म साहनी ने अपने उपन्यास 'तमस' में किया है।

जहां मुस्लिम लीग पाकिस्तान की मांग की रही थी, मुस्लिम लीग के कार्यकर्ता 'पाकिस्तान–जिन्दाबाद' के नारे लगा रहे थे और मुस्लिम लीग का कहना था कि कांग्रेस मुसलमानों की प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती। कांग्रेस हिन्दुओं की जमात है किस तरह से मुरादअली नामक व्यक्ति नत्थू से सूअर की हत्या करवाता और बाद में वही सूअर एक मस्जिद की सीढ़ी पर पाया जाता है। मस्जिद में सूअर के शव को देखकर मुसलमान उतेजित हो जाते है क्योंकि मुस्लिम धर्म में सूअर को एक बहुत ही पवित्र पशु माना जाता है। अतः मस्जिद की सीढ़ी पर सूअर का शव देखकर मुसलमान इसे अपने धर्म की तौहीन मानते हैं। मुस्लिम साम्प्रदायिकता भी हिन्दू साम्प्रदायिकता की भांति दंगों की विनाश लीला से कम घिनौनी भूमिका नहीं निभाती। अंग्रेज शासकों ने योजनाबद्ध रूप से हिन्दुओं और मुसलमानों को आपसी घृणा भाव को बढ़ावा दिया ताकि हिन्दू और मुसलमान आपस में लड़ते रहे और हम देश पर अधिक से अधिक समय तक शासन कर सकें। उपन्यास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रिचर्ड दंगाग्रस्त क्षेत्र का डिप्टी कमिश्नर है। रिचर्ड को सारी घटना का ज्ञान होता था लेकिन वह स्थिति को सामान्य बनाए रखना नहीं चाहता था, उससे उसकी दोगली नीति का स्पष्ट पता चलता है। शासक ओर धर्म के नाम पर गरीब जनता को लड़ाते हैं और फिर अपनी सहानुभूति दिखाते हैं।

सांकेतिक रूप में इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि स्वतंत्रता पूर्व के भारत में शासक वर्ग इन्हीं साम्राज्यवादी विघटनकारी नीतियों का अनुसरण करते हुए, अपनी

सत्ता को बनाए रखना चाहता था। वह जनता की आकाक्षाओं की पूर्ति न कर पाने के फलस्वरूप उन्हें बदहाली, भूखमरी, गरीबी, महंगाई आदि समस्याओं के बीच जीता हुआ छोड़कर आपस में ही लड़ाए रखना चाहता हूं, ताकि वे सत्ता के खिलाफ संघर्ष में एकजुट न हो सके। देशभर में बार–बार भड़क उठने वाले साम्प्रदायिक दंगे इसका प्रत्यक्ष प्रमाण माने जा सकते हैं।

अंत में कहा जा सकता है कि 'तमस' में साम्प्रदायिक शक्तियों की पहचान के साथ–साथ साम्प्रदायिकता विरोधी संदेश इतना अधिक स्पष्ट है कि उसे किसी भी तरह से नकारा नहीं जा सकता।

संदर्भ

1. भीष्म साहनी, उपन्यास, साहित्य, विवेक द्विवेदी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1998
2. भीष्म साहनी, तमस, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1973
3. वही